भाग्य का पुनर्पाठ

आधुनिक शोध के आलोक में ज्योतिष की नई व्याख्या

आने वाले वर्षों में मेरा विश्वास है कि ज्योतिष का विकास भविष्यवाणी के दावों से अधिक उसके परामर्शात्मक, मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और सामाजिक आयामों के कारण होगा. यह विषय तभी सम्मान प्राप्त करेगा जब इसके अध्येता और आचार्य सत्य, नैतिकता, अनुसंधान, प्रमाण और मानवीय संवेदनशीलता को सर्वोच्च स्थान देंगे. यही आधुनिक वैश्विक शोध का संदेश है और यही भारतीय ज्योतिष की शाश्वत आत्मा भी है. इस दिशा में आगे बढ़ते हुए हम ऐसी ज्योतिषीय परम्परा का निर्माण कर सकते हैं जो मनुष्य को भाग्य का बंदी नहीं, बल्कि आत्मबोध, पुरुषार्थ और उत्तरदायी जीवन का साधक बनाए.

ज्योतिषाचार्य
डॉ. तेजस्कर पाण्डेय

मानव सभ्यता के इतिहास में यदि किसी एक प्रश्न ने सबसे अधिक चिन्तन, मनन और दार्शनिक विमर्श को जन्म दिया है, तो वह है—क्या मनुष्य का जीवन पूर्णत: भाग्य द्वारा संचालित होता है, अथवा वह अपने पुरुषार्थ, विवेक और कर्म के माध्यम से अपने भविष्य का निर्माण स्वयं कर सकता है? यह प्रश्न केवल दर्शन का विषय नहीं है, बल्कि धर्म, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, संस्कृति और ज्योतिष जैसे अनेक ज्ञान-विषयों का भी मूल आधार है. प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक इस प्रश्न का कोई एक सार्वभौमिक उत्तर नहीं मिल पाया है, किन्तु प्रत्येक युग ने अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक परिवेश के अनुसार इसकी नई व्याख्या अवश्य प्रस्तुत की है. इक्कीसवीं शताब्दी में वैश्विक स्तर पर ज्योतिष के क्षेत्र में हो रहे नवीन शोधों ने इस विषय को एक बिल्कुल नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान किया है. अब ज्योतिष को केवल भविष्यवाणी की प्रणाली के रूप में नहीं, बल्कि मानव जीवन में अर्थ, उद्देश्य, आत्मबोध और नैतिक उत्तरदायित्व की खोज करने वाले एक गंभीर बौद्धिक अनुशासन के रूप में समझा जा रहा है.

मेरे विचार में ज्योतिष का वास्तविक स्वरूप तभी समझा जा सकता है जब हम उसे भय, अंधविश्वास और चमत्कारवाद से अलग करके मानव अनुभव की एक प्रतीकात्मक भाषा के रूप में देखें. जन्मकुण्डली कोई ऐसा आदेश-पत्र नहीं है जिसमें जीवन की प्रत्येक घटना अपरिवर्तनीय रूप से लिखी हुई हो. यह जीवन की संभावनाओं, प्रवृत्तियों, शक्तियों, सीमाओं और विकास के अवसरों का एक सूक्ष्म मानचित्र है. ग्रह, राशियाँ, नक्षत्र और भाव मनुष्य को विवश नहीं करते; वे केवल उन परिस्थितियों और मानसिक प्रवृत्तियों का संकेत देते हैं जिनके बीच व्यक्ति अपना जीवन व्यतीत करता है. अंतिम निर्णय सदैव मनुष्य के विवेक, शिक्षा, संस्कार, आत्मसंयम और पुरुषार्थ पर निर्भर करता है. इसी कारण मैं ज्योतिष को भाग्यवाद का नहीं, बल्कि जागरूकता का विज्ञान मानता हूँ.

भारतीय ज्ञान-परम्परा में भाग्य और पुरुषार्थ का सम्बन्ध अत्यन्त संतुलित रूप में प्रस्तुत किया गया है. उपनिषदों, भगवद्गीता, महाभारत और अनेक स्मृतियों में कर्म की प्रधानता पर बल दिया गया है. प्रारब्ध मनुष्य को कुछ परिस्थितियाँ प्रदान करता है, किन्तु वर्तमान कर्म उसे उन परिस्थितियों में सर्वोत्तम निर्णय लेने की शक्ति देता है. यदि भाग्य ही सब कुछ होता, तो शिक्षा, साधना, तपस्या, सेवा, दान, योग, ध्यान और आत्मानुशासन का कोई महत्त्व नहीं रह जाता. भारतीय दर्शन इसलिए मनुष्य को कर्मयोगी बनने की प्रेरणा देता है. ज्योतिष का उद्देश्य भी व्यक्ति को कर्म से विमुख करना नहीं, बल्कि उसे अपने जीवन की दिशा समझाकर अधिक उत्तरदायी बनाना है.

समकालीन वैश्विक शोधों ने भी इस दिशा को बल प्रदान किया है. अनेक विद्वान अब यह मानते हैं कि ज्योतिषीय प्रतीकों का महत्त्व उनकी भविष्यवाणी की क्षमता से अधिक इस बात में है कि वे व्यक्ति को स्वयं को समझने में किस सीमा तक सहायता करते हैं. जब कोई व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली के माध्यम से अपने स्वभाव, प्रवृत्तियों, आन्तरिक संघर्षों, प्रतिभाओं और कमजोरियों का अध्ययन करता है, तो उसके भीतर आत्मनिरीक्षण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है. यह आत्मनिरीक्षण ही आत्मविकास का प्रथम चरण है. इस प्रकार ज्योतिष केवल बाहरी घटनाओं का नहीं, बल्कि आन्तरिक चेतना का भी अध्ययन बन जाता है.

आज के युग में मनोवैज्ञानिक परामर्श का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है. तनाव, अवसाद, पारिवारिक विघटन, अकेलापन, भविष्य की अनिश्चितता और तीव्र प्रतिस्पर्धा ने आधुनिक मनुष्य को मानसिक रूप से अस्थिर बना दिया है. ऐसे समय में यदि ज्योतिषी केवल भय उत्पन्न करे, अशुभ ग्रहों का आतंक दिखाए या महँगे उपायों के माध्यम से आर्थिक शोषण करे, तो वह अपने ज्ञान का दुरुपयोग कर रहा है. इसके विपरीत यदि वह व्यक्ति की परिस्थितियों को समझते हुए उसे धैर्य, आशा, आत्मविश्वास और सकारात्मक निर्णय लेने की प्रेरणा देता है, तो ज्योतिष वास्तव में एक परामर्शात्मक और मानवीय विज्ञान बन सकता है. मेरा विश्वास है कि भविष्य का उत्तरदायी ज्योतिषी भविष्य बताने वाला नहीं, बल्कि जीवन का संवेदनशील मार्गदर्शक होगा.

ज्योतिष के क्षेत्र में नैतिकता का प्रश्न आज पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है. समाज में ऐसे अनेक लोग सक्रिय हैं जो स्वयं को महान ज्योतिषाचार्य घोषित कर भय और भ्रम का वातावरण उत्पन्न करते हैं. वे ग्रहों के नाम पर असत्य भविष्यवाणियाँ करते हैं, परिवारों में अनावश्यक तनाव उत्पन्न करते हैं तथा आर्थिक लाभ के लिए धार्मिक आस्था का दुरुपयोग करते हैं. ऐसी प्रवृत्तियाँ न केवल सामाजिक दृष्टि से हानिकारक हैं, बल्कि ज्योतिष जैसे प्राचीन ज्ञान-विषय की विश्वसनीयता को भी गम्भीर क्षति पहुँचाती हैं. मेरा मत है कि प्रत्येक ज्योतिषी के लिए आचार-संहिता, उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और सत्यनिष्ठा उतनी ही आवश्यक है जितनी किसी चिकित्सक, अधिवक्ता या मनोवैज्ञानिक के लिए होती है.

भारतीय ज्योतिष की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वह मनुष्य को केवल ग्रहों का दास नहीं मानता. वह ग्रहों को कर्मफल के संकेतक के रूप में स्वीकार करता है, किन्तु साथ ही यह भी बताता है कि ज्ञान, तप, सत्कर्म, सेवा, संयम, दान, प्रार्थना और आत्मपरिवर्तन के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन की दिशा को अधिक श्रेष्ठ बना सकता है. यही कारण है कि भारतीय परम्परा में उपायों का वास्तविक उद्देश्य ग्रहों को बदलना नहीं, बल्कि मनुष्य के आचरण और मानसिकता को परिष्कृत करना माना गया है. यदि यह मूल भावना समझ ली जाए, तो ज्योतिष अंधविश्वास नहीं, बल्कि आत्मसंस्कार का माध्यम बन सकता है.

आधुनिक समाज में कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डिजिटल प्रौद्योगिकी और विशाल आँकड़ों के विश्लेषण ने ज्ञान की नई संभावनाएँ उत्पन्न की हैं. ज्योतिष भी इस परिवर्तन से अछूता नहीं है. आज कम्प्यूटर आधारित कुण्डली निर्माण, सांख्यिकीय अध्ययन, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण तथा अंतरविषयी शोधों के माध्यम से ज्योतिष को अधिक व्यवस्थित और प्रमाण-आधारित रूप में समझने का प्रयास किया जा रहा है. किन्तु हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि कोई भी तकनीक मानवीय संवेदना, नैतिक विवेक और अनुभवी परामर्श का स्थान नहीं ले सकती.

गुरु पूर्णिमा पर 56 साल बाद दुर्लभ संयोग

6 राशियों पर बरसेगी गुरु कृपा

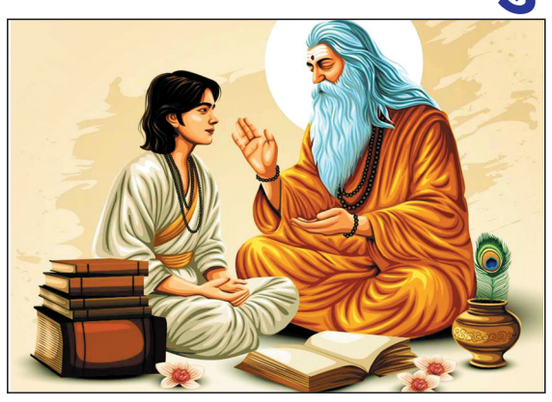

गुरु और शिष्य की पावन परंपरा को समर्पित गुरु पूर्णिमा इस वर्ष केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि ज्योतिषीय नजरिए से भी बेहद विशेष मानी जा रही है. वैदिक पंचांग के अनुसार 29 जुलाई 2026 को मनाई जाने वाली गुरु पूर्णिमा पर ऐसा दुर्लभ ग्रह संयोग बन रहा है, जिसे ज्योतिषाचार्य कई दशकों में एक बार बनने वाला विशेष योग बता रहे हैं.

इस अवसर पर बुधादित्य राजयोग, शश राजयोग और हंस राजयोग जैसे शुभ योगों का प्रभाव एक साथ देखने को मिलेगा. ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार इन योगों का असर सभी राशियों पर रहेगा, लेकिन मेष, वृषभ, सिंह, धनु, मकर और कुंभ राशि के जातकों के लिए यह समय विशेष रूप से लाभकारी माना जा रहा है. वैदिक पंचांग के अनुसार आषाढ़ पूर्णिमा तिथि का आरंभ 28 जुलाई 2026 की शाम 6:18 बजे होगा और इसका समापन 29 जुलाई 2026 की रात 8:05 बजे होगा. उदयातिथि के आधार पर गुरु पूर्णिमा का पर्व 29 जुलाई को मनाया जाएगा. इस दिन प्रात:काल गुरु पूजन, भगवान सत्यनारायण की पूजा, वेदव्यास का स्मरण, मंत्र-जाप और दान-पुण्य का विशेष महत्व बताया गया है.

धार्मिक मान्यता है कि इस दिन गुरु का आशीर्वाद प्राप्त करने से ज्ञान, विवेक, सफलता और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है. ज्योतिषीय मान्यताओं के अनुसार बुध और सूर्य की युति से बनने वाला बुधादित्य राजयोग बुद्धिमत्ता, करियर और प्रतिष्ठा में वृद्धि का संकेत देता है, जबकि शश और हंस राजयोग सुख, समृद्धि और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करने वाले माने जाते हैं. ऐसे में जिन राशियों पर इन योगों का शुभ प्रभाव रहेगा, उन्हें नौकरी, व्यापार, शिक्षा, आर्थिक लाभ और सामाजिक सम्मान के क्षेत्र में अनुकूल परिणाम मिलने की संभावना व्यक्त की जा रही है. हालांकि ज्योतिषीय भविष्यवाणियां आस्था और पारंपरिक मान्यताओं पर आधारित होती हैं, इसलिए इन्हें निश्चित परिणाम के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए.

आज का वास्तु टिप्स

सुनील सैनी

आपने कभी सोचा है कि आप वास्तु के अनुसार ही घर क्यों बनाना चाहते हैं आखिर यह वास्तु होता क्या है? क्या यह हिंदू के लिए ही काम करता है? क्या सिर्फ हिंदू धर्म और पुराणों में जो लिखा है वही वास्तु है? क्या आपने कभी सोचा है जो मनुष्य जो क्लाइमेट जो लाइफस्टाइल द्वापर युग में थी सतयुग में वही आज कलयुग में भी है नहीं ना, तो फिर वास्तु सिर्फ वही तो नहीं हो सकता ना।

यह जरूरी है केवल इस निर्माण पद्धति को एक सॉलिड बेस प्रदान करता है लेकिन समय के साथ-साथ वास्तु में भी परिवर्तन होता है क्योंकि वास्तु वास्तव में प्रकृति और ब्रह्मांड की ऊर्जा के साथ-साथ और उसे समय के उस स्थान के क्लाइमेट को साथ में लेकर उसकी स्टडी करने के बाद ही किसी भवन की परिकल्पना की जाती है।

वास्तव में वास्तु पंचमहाभूतों पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश के बीच निर्माण करने का विज्ञान है ताकि वहां रहने वाले लोगों को उत्तम स्वास्थ्य, समृद्धि और मानसिक शांति मिल सके। इसमें भाव और यह सभी धर्म के लोगों के लिए एक ही होता है सिर्फ उनके जीवन पद्धति में थोड़ा-थोड़ा फर्क होता है लेकिन यह पंचमहाभूत पांच तत्व सभी के लिए कार्य करते हैं। इसका वैज्ञानिक और भौगोलिक आधार है सौर भौतिकी, भू-चुंबकत्व या मैग्नेटिक फील्ड, और हवा का बहाव कि दिशा से किस दिशा में किस स्पीड से किस एनर्जी से, और वहां की जलवायु उसके कार्य की प्रकृति और ब्रह्मांड में फैली हुई कॉस्मिक एनर्जी, पैशन एनर्जी को अब्जॉर्ब करना और नेगेटिव एनर्जी को रिफ्लेक्ट करना। इन सभी बातों को ध्यान पर रखकर ही एक ऐसा भवन निर्मित किया जाता है जो तुम स्वास्थ्य प्रदान करता है, जो कि मानव जीवन की सबसे पहली आवश्यकता है। उसके बाद समृद्धि, मानसिक शांति मिल सके। इन्हीं सब बातों का ध्यान में रखकर जो प्लाट का साइज है, दिशाएं हैं उसके अनुसार वास्तु पद विन्यास, वास्तु पुरुष मंडल, गोल्डन रेशों आदि का उपयोग कर भवन निर्माण का प्लान किया जाना चाहिए।

सावन सोमवार का जानिए धार्मिक महत्व

भगवान शिव की आराधना के लिए सबसे पवित्र माने जाने वाले श्रावण (सावन) मास का इंतजार देशभर के करोड़ों श्रद्धालु कर रहे हैं. हर वर्ष की तरह इस बार भी सावन की शुरुआत को लेकर लोगों के मन में सबसे बड़ा सवाल है कि सावन 29 जुलाई 2026 से शुरू होगा या 30 जुलाई 2026 से? दरअसल, अलग-अलग पंचांग परंपराओं और तिथि गणना के कारण यह भ्रम पैदा होता है. उत्तर भारत में प्रचलित पंचांग के अनुसार सावन मास की शुरुआत 30 जुलाई 2026 से मानी जाएगी और इसका समापन 28 अगस्त 2026 को होगा. वहीं कुछ क्षेत्रों में अमांत और पूर्णिमांत पंचांग के अंतर के कारण तिथियों में भिन्नता दिखाई देती है.

सावन का महीना भगवान शिव और माता पार्वती की उपासना के लिए अत्यंत शुभ माना जाता है. धार्मिक मान्यता है कि इस पूरे महीने शिवलिंग पर जल, गंगाजल, दूध, बेलपत्र, धतूरा, भांग और सफेद पुष्प अर्पित करने से महादेव प्रसन्न होते हैं तथा भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते हैं. विशेष रूप से सावन सोमवार व्रत का महत्व अत्यधिक बताया गया है. अविवाहित कन्याएं योग्य जीवनसाथी की कामना से और विवाहित महिलाएं सुखी दांपत्य एवं परिवार की समृद्धि के लिए व्रत रखती हैं

क्या बेडरूम में घोड़ों की तस्वीर लगाना होता है शुभ

यदि बेडरूम में घोड़े की तस्वीर लगानी ही हो, तो एक या दो शांत मुद्रा में खड़े सफेद घोड़ों की कलात्मक पेंटिंग बेहतर विकल्प मानी जाती है. ऐसी तस्वीरें प्रेम, विश्वास, संतुलन और सकारात्मक संबंधों का प्रतीक मानी जाती हैं.

घर का बेडरूम केवल आराम करने की जगह नहीं, बल्कि मानसिक शांति, दांपत्य जीवन और सकारात्मक ऊर्जा का भी केंद्र माना जाता है. ऐसे में लोग अक्सर यह जानना चाहते हैं कि क्या बेडरूम में घोड़ों की तस्वीर लगाना शुभ होता है.

वास्तु शास्त्र के अनुसार इसका उत्तर तस्वीर के प्रकार और स्थान पर निर्भर करता है. दौड़ते हुए सात घोड़ों की तस्वीर ऊर्जा, प्रगति और सफलता का प्रतीक मानी जाती है, लेकिन इसे बेडरूम के बजाय ड्रॉइंग रूम, ऑफिस या कार्यस्थल में लगाना अधिक शुभ माना जाता है. इसकी वजह यह है कि दौड़ते घोड़े गति, महत्वाकांक्षा और सक्रियता का प्रतीक होते हैं, जबकि बेडरूम का वातावरण शांत, संतुलित और आरामदायक होना चाहिए. ऐसी ऊर्जावान तस्वीरें कुछ मान्यताओं के अनुसार विश्राम वाले स्थान के लिए उपयुक्त नहीं मानी जातीं.यदि बेडरूम में घोड़े की तस्वीर लगानी ही हो, तो एक या दो शांत मुद्रा में खड़े सफेद घोड़ों की कलात्मक पेंटिंग बेहतर विकल्प मानी जाती है. ऐसी तस्वीरें प्रेम, विश्वास, संतुलन और सकारात्मक संबंधों का प्रतीक मानी जाती हैं. वहीं, युद्ध, तेज दौड़, आक्रामक मुद्रा या संघर्ष दर्शाने वाली घोड़ों की तस्वीरों से बचने की सलाह दी जाती है.वास्तु के अनुसार बेडरूम में प्रकृति, फूल, शांत झील, पर्वत, हंसों का जोड़ा या खुशहाल दंपति की कलात्मक तस्वीरें अधिक उपयुक्त मानी जाती हैं. माना जाता है कि ऐसे चित्र कमरे में सुकून और सकारात्मक माहौल बनाए रखने में सहायक होते हैं.

हालांकि, यह ध्यान रखना जरूरी है कि वास्तु संबंधी मान्यताएं पारंपरिक विश्वासों पर आधारित हैं. घर की सजावट करते समय अपनी पसंद, सुविधा और सौंदर्यबोध को भी समान महत्व देना चाहिए.

पूजा घर में कितने शंख रखने चाहिए? जानें धार्मिक मान्यता

हिंदू धर्म में शंख को अत्यंत पवित्र और शुभ माना जाता है. पूजा, आरती और धार्मिक अनुष्ठानों में शंख का विशेष महत्व है. ऐसे में कई लोगों के मन में सवाल उठता है कि घर के पूजा घर में कितने शंख रखने चाहिए? धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, घर के मंदिर में एक या अधिकतम दो शंख रखना शुभ माना जाता है, लेकिन उनके उपयोग का उद्देश्य अलग-अलग होना चाहिए.परंपरा के अनुसार यदि दो शंख रखें, तो एक पूजन के लिए और दूसरा शंखनाद (बजाने) के लिए रखा जा सकता है. जिस शंख से भगवान का अभिषेक या पूजन किया जाता है, उसे सामान्यत: नहीं बजाया जाता. वहीं, शंखनाद वाला शंख नियमित रूप से आरती या पूजा के समय बजाया जा सकता है.धार्मिक मान्यताओं में यह भी कहा गया है कि पूजा घर में अनावश्यक रूप से कई शंख इकट्ठा नहीं करने चाहिए. इससे पूजा स्थल अव्यवस्थित हो सकता है. शंख को हमेशा साफ-सुथरे स्थान पर, लाल या पीले कपड़े पर रखकर सम्मानपूर्वक स्थापित करना शुभ माना जाता है.वास्तु और धार्मिक परंपराओं के अनुसार, दक्षिणावर्ती शंख को अत्यंत शुभ माना जाता है और इसे धन, समृद्धि तथा माता लक्ष्मी की कृपा का प्रतीक माना जाता है.

राशिफल

दिनांक- 26 जुलाई से 01 अगस्त 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य कर्क राशि में, मंगल वृषभ राशि में, बुध मिथुन राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र सिंह राशि में ता. 31 को 5.54 रातअंत से कन्या राशि में, शनि मीन राशि में ता. 27 को 11.29 दिन से वक्री, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा वृश्चिक धनु मकर और कुम्भ राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- ता. 27/07/2026 को शनि वक्री होगा, इस समय बाजार पर मंदी का प्रभाव दिखेगा. किन्तु चुने हुये क्षेत्रों में तेजी की सम्भावना बनी रहेगी. ता. 27/07/2026 से सोना चांदी में बड़ी घटा-बढ़ी देखने को मिलेगी. ऐसे समय यदि तेजी आती है तो न सोची हुयी तेजी देखने को मिलेगी. ता. 31 को शुक्र का कन्या में प्रवेश और वक्रयां शनि के प्रभाव से नील, मैथी, जीरा, सोना, चांदी, मोती, हींग, मिर्च में तेजी व रूई में मंदी करता है.

पर्व-व्रत-त्यौहार :

रविवार	26 जुलाई को	प्रदोष व्रत, वासुदेव द्वादशी, वामन द्वादशी,
सोमवार	27 जुलाई को	विजया पार्वती व्रत, मंगला तेरस
मंगलवार	28 जुलाई को	व्रत पूर्णिमा,
बुधवार	29 जुलाई को	व्यास पूजा, स्नानदान पूर्णिमा, गुरू पूर्णिमा,
गुरूवार	30 जुलाई को	पार्थिव शिव पूजन प्रारंभ

मेष

शैक्षणिक जीवन में प्रगतिशीलता बनी रहेगी, नौकरी में उत्साहवर्धक समाचार प्राप्त होने के योग हैं, जमीन जायजाद आदि के कार्यो में अनुकूलता रहेगी, प्रियजनों से संपर्क, मेलजोल बढेगा, पुरानी समस्याओं का सरलता से समाधान हो सकता है, कोई बहुप्रतीक्षित कार्य अचानक बनने का योग है, मान सम्मान में वृद्धि होगी, हर्षोल्लास की स्थितियां बन सकती हैं.

वृषभ

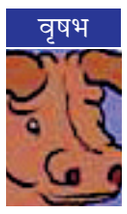

आपका डूबता हुआ पैसा प्राप्त होने से मन में शांति और संतोष रहेगा, भूमि भवन जमीन जायजाद प्रापर्टी के कार्यो में अनुकूलता रहेगी, गृहस्थ जीवन सुखी रहेगा, सट्टे के व्यापारी सावधानी रखें, नुकसान का भय है, मान प्रतिष्ठा पर नजर रखें, आपके सम्मान पर कोई व्यक्ति ऊंगली उठा सकता है, अत: जोखिम के कार्यो से बचें, वाहन का प्रयोग करते समय सावधानी रखें.

मिथुन

सामाजिक कार्यो में परिश्रम की अधिकता रहेगी, उचित सफलता प्राप्त होने के योग हैं, आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी, एकाधिक स्त्रोंतों में आमदानी के योग हैं, जमीन जायजाद में उलझनों का सामना करना पड़ सकता है, परन्तु सारी समस्यों का समाधान भी प्राप्त होगा, सप्ताहान्त में निवास की समस्या का हल होने से मन में विशेष प्रसन्नता रहेगी.

कर्क

इष्ट मित्रों के समर्थन से किसी विशेष उपलब्धि की संभावना है, नौकरी में विशेष प्रसन्नता रहेगी, वायदे के कार्य व्यापार में सावधानी रखें, अन्यथा हानि की संभावना है, अनुबंधों का उचित लाभ प्राप्त नहीं हो सकेगा, किसी हितचिन्तक से विचार विमर्श कर लें, रचनात्मक कार्यो से लाभ होगा, पारिवारिक जीवन सुखद एवं सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में व्यतीत होगा.

सिंह

चिरपरिचित व्यक्तियों से मेल मुलाकात का योग है, आपसी लोगों का सहयोग रहेगा, शिक्षा के क्षेत्र में सावधानी रखकर कार्य करें, प्रतियोगी परीक्षाओं में विशेष ध्यान दें, स्थिति को देखकर कार्य करें, जमीन जायजाद संबंधी समस्याओं का सरलता से समाधान होगा, सप्ताह के मध्य यात्रा के कारण परेशानी हो सकती है. निकट भविष्य में अच्छे लाभ की संभावना हैं.

कन्या

आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, राजकीय क्षेत्रों में परेशानी आ सकती है, नौकरी में पदोन्नति अथवा जबावदारी के कार्य सामने आने के योग हैं, व्यापारिक क्षेत्रों में प्रगति होगी, बिगड़ा हुआ कार्य बनने का योग है, पुराना पैसा प्राप्त होगा, अथवा गुमी वस्तु मिलने का योग है, निकटस्थ सहयोगियों का अच्छा सहयोग मिलेगा, सप्ताह के बीच थोड़ा बहुत व्यवधान आ सकता है.

तुला

खर्च की अधिकता रहेगी, अचानक आपको पैसे की व्यवस्था करना पड़ सकती है, मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, पारिवारिक उत्तरदायित्व पूरा करना पड़ेगा, नई जिम्मेदारियों को सम्भालने में असमर्थता महसूस कर सकते हैं, आर्थिक मदद मिलने का योग है, फिर भी दैनिक कार्य बाधित नहीं होंगे, मान सम्मान की दृष्टि से यह सप्ताह विशेष उपलब्धि का रहेगा.

वृश्चिक

परिवार के पूज्य व्यक्ति से स्वास्थ्य को लेकर परेशानी रह सकती है, महिला जाति की सलाह उपयोगी रहेगी, कुछ आकस्मिक परिवर्तन भी हो सकते हैं, कोई भी कार्य अड़चन के बिना पूरा नहीं होगा, जहां तक बने अपने कार्यो को स्वत: पूरा करने का प्रयास करें, तभी आपको सफलता मिल सकती है, परोपकारी भावनाओं पर नियंत्रण रखकर कार्य करें, नई जिम्मेदारी आ सकती है.

धनु

राजकीय क्षेत्र में विशेष सफलता के योग हैं, कुछ नये आर्थिक समीकरण बनने का योग है, जमीन जायजाद संबंधी कार्यो में अनुकूलता रहेगी, उत्साहवर्धक शुभ समाचार मिलने के योग हैं, नौकरी में उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा, व्यवसायिक क्षेत्र में प्रगति होगी, सामाजिक कार्यो में सफलता मिलेगी, शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी.

मकर

इष्ट मित्रों के सहयोग से आपके महत्वपूर्ण कार्य बनेंगे, संतान के दायित्वों की पूर्ति होगी, बिना मेहनत से नुकसान का कारण बन सकता है, वास्ते इस ओर सावधानी रखें, जो लोग वायदे का कार्य करते हैं, वे सावधानी रखें, दाम्पत्य जीवन सुख शांति से व्यतीत होने का योग है. ठेकेदारी आदि क्षेत्रों से जुड़े व्यक्तियों को परेशानी हो सकती है, सावधानी बांछनीय है.

कुम्भ

सामाजिक कार्यो में विशेष रूचि रहेगी, आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, कहीं से मदद मिलने के योग हैं, भौतिक सुख साधनों में वृद्धि होगी, जमीन, जायजाद, के कार्यो में प्रगति का योग है, विरोधियों का पराभव होगा, साहसिक कार्यो के प्रति अभिरूचि बढ़ेगी, विविध समस्याओं का समाधान होगा, सप्ताह के उत्तरार्ध में अचानक लाभ की संभावना है, सुखद यात्रा होगी.

मीन

बना बनाया काम बिगड़ता नजर आयेगा, किन्तु आपकी सूझबूझ एवं विनम्रता बुद्धिमत्ता से कार्य संभल जायेगा, हो सकता है, आप किसी की मदद भी ले सकते हैं, अपने कार्यो के प्रति आपको स्वयं ही लगन एवं रूचि लेना पड़ेगी, आर्थिक स्थिति में सामान्य की अपेक्षा आंशिक सुधार नजर आयेगा, आमदानी के जरिये बढ़ेंगे, और लाभ का योग है.